विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-10-01-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: सप्तम: पाठनाम पर्यावरण-विज्ञानम्

गद्यांश:-

मयूर:- (पिच्छानुद्घाट्य नृत्यमुद्रायां स्थित: सन)न कोऽपि त्रैलोक्ये मत्सदृश: सुन्दर: । वन्यजन्तूनामुपरि आक्रमणं कर्तारं तु अहं स्वसौन्दर्येण नृत्येन च आकर्षातं कृत्वा वनात् बहिष्करिष्यामि

अत: अहमेव योग्य: वनराजपदाय ।(एतस्मिन्नेव काले व्याघ्रचित्रकौ अपि नदीजलं पातुमागतौ एतं विवादं शृणुत:वदत: च)

व्याघ्रचित्रकौ -अरे किं वनराजपदाय सुपात्रं चीयते?

एतदर्थं तु आवामेव योग्यौ ।यस्य कस्यापि चयनं कुर्वन्तु सर्वसम्मत्या ।

शब्दार्था:-

पिच्छान् -पंखों को , उद्घाट्य – फैलाकर

सन् – होता हुआ , कर्तारम् - करने वाले को ,

स्वसौन्दर्येण - अपनी सुन्दरता से , मत्सदृश:- मेरे जैसा ,

बहिष्करिष्करिष्यामि – बाहर कर दूंगा , काले – समय में ,

एतस्मिन्नेव - इसी ही , पातुम् - पीने के लिए, आगतौ – दोनों आ गये ,

सुपात्रं – योग्य पात्र , चीयते – चुना जा रहा है ,सर्वसम्मत्या – सबके विचार से

अर्थ- मोर- (पंखों को खोलकर नाचने की मुद्रा में खड़ा होता हुआ) कोई भी तीनों लोकों में मेरे जैसा सुन्दर नहीं है।जंगल के जीवों पर आक्रमण करने वाले को मैं अपनी सुन्दरता और नृत्य से आकर्षित करके जंगल से बाहर कर दूंगा। इसलिए मैं ही वन के राजा के पद के लिए योग्य हूं।

(इसी समय बाघ और चीता भी नदी के जल को पीने के लिए आ गये ।इस विवाद को सुनते और बोलते हैं)

बाघ और चीता – अरे क्या वन के राजा के पद हेतु अच्छे पात्र को चुना जा रहा है ?इसके लिए तो हमदोनों ही योग्य हैं ।जिस किसी का भी चयन करें सर्वसम्मति से कर लें ।